प्लास्टिक के उपयोग से पर्यावरण को हथियारों से भी बड़ा खतरा : एक भौगोलिक अध्ययन बक्सर जिला के सन्दर्भ में

डॉ० विमलेश कुमार

प्लास्टिक को मिला लंबे जीवन का वरदान इंसानों के लिए अंभिशाप साबित हो रहा है। लंबे समय तक टिकाऊ रहने के चलते इसका कचरा भी प्राकृतिक रूप से नष्ट नहीं होता है। अधिकतर प्लास्टिक खुद व खुदष्ट नहीं होते, वे खुद को छोटे से छोटे रूपों में तोड़ते रहते हैं। इन्हीं सूक्ष्म प्लास्टिक को जानवर और मछलियां चारे के भ्रम में खा लेते हैं। इस तरह प्लास्टिक हम लोगों के भोजन तक पहुंच जा रहा है। दुनिया के अधिकांश हिस्सों में घरों को नलों द्वारा की जा रही जलापूर्ति में भी ये प्लास्टिक के सूक्ष्म हिस्से मिलने की बात सामने आई है। नालों को जाम करके ये प्लास्टिक मच्छरों और कीटों को पनपने का अनुकूल माहौल देते हैं जिससे मच्छरजनित रोगों का प्रकोप बढ़ता है।

बिहार में पटना जैसा बड़ा शहर हो या बक्सर जैसा छोटा शहर सभी में घरों से निकलने वाले प्लास्टिक कचने की समुचित निस्तारण व्यवस्था नहीं है। वन, पर्यावरण एवं मौसम परिवर्तन मंत्रालय द्वारा बनाए गए प्लास्टिक अपशिष्ठ प्रबंधन (संशोधन) नियम–2018 अभी अपना कोई खास असर जमीन पर नहीं दिखा पाया है। बिहार के बक्सर जिला में प्लास्टिक से हो रहे पर्यावरणीय प्रदूषण का एक विवरणात्मक प्रस्तुतिकरण है। इसके लिए संबंधित द्वितीयक आंकड़ों का संकलन विभिन्न लेखों, समाचार पत्रों तथा बिहार सरकार एवं केन्द्र सरकार के रिपोर्ट आदि स्त्रोतों से किया गया है।